भोपाल, सोमवार, 22-28 जनवरी 2024 वर्ष-9, अंक-41 भोपाल, इंदौर, उज्जैन, सागर, मुरैना, रीवा, शिवपुरी से एक साथ प्रकाशित पृष्ठः-8,मूल्यः- 2 रुपए

मध्य प्रदेश के सीएम मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के निर्देश पर उज्जैन से महाकालेश्वर मंदिर समिति ने अयोध्या में आने वाले राम भक्तों के लिए पांच लाख लड्डू का प्रसाद भेजा गया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि कई ऐसे वृतांत है, जहां पर भगवान श्री राम के साथ उज्जैन का नाम जुड़ा हैं। वनवास के दौरान भी वह उज्जैन आए थे। उन्होंने भगवान महाकाल के दरबार में पहुंचकर आशीर्वाद भी लिया था। इधर, छत्तीसगढ़ के लोगों की भगवान राम से विशेष श्रद्धा है, क्योंकि छत्तीसगढ़ राम का ननिहाल है। माता कौशल्या का जन्मभूमि है। इस लिहाज से छत्तीसगढ़ के लोग अयोध्या में चल रही तैयारी में अपनी ज्यादा ज्यादा भूमिका में रहने की कोशिश में है। यहां से 300 मीट्रिक टन सुगंधित चावल भेजने के बाद ननिहाल से 100 टन सब्जी भेजी गई है।

» प्रधानमंत्री मोदी आज प्राण प्रतिष्ठा में बतौर यजमान की भूमिका में शामिल होंगे

» अयोध्या राम मंदिर के चारों ओर प्रतीकात्मक मुर्ति का कराया गया भ्रमण

» प्राण प्रतिष्ठा अनुष्ठान के दो दिन हुएः 22 जनवरी को होगा मुख्य समारोह

» स्थापित की जाएगी 'उत्सव' प्रतिमा, प्रांगण में रहेगी 'अचल' मूर्ति

राममय मध्यप्रदेश

प्राण-प्रतिष्ठा के दिन पूरे देश में आधे दिन की छुट्टी का ऐलान

भोपाल। जागत गांव हमार

देश में 22 जनवरी की तारीख इतिहास के सुनहरे पन्नों पर दर्ज हो जाएगी। अयोध्या में श्रीराम मंदिर में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा का उत्सव पूरे देश में शुरू हो गया है। मध्यप्रदेश में भी संस्कृति विभाग द्वारा विभिन्न गतिविधियां आयोजित की जा रही हैं। प्रदेश के 28 पवित्र आस्था स्थलों पर श्रीराम कथा के विशिष्ट चरित्रों पर आधारित श्रीलीला समारोह का आयोजन किया जा रहा है। प्रदेश में आस्था और संस्कृति का वातावरण निर्मित करने के उद्देश्य से प्रदेश के सभी जिलों में अलग-अलग स्थानों पर प्रभात फेरी एवं कलश यात्रा एक अभियान के रूप में जनअभियान परिषद के सहयोग से की जा रही है। महाकाल प्रबंध समिति की ओर से 5 लाख लडडुओं का प्रसाद अयोध्या भेजे जा रहे हैं। इस कड़ी में मंदिरों एवं मंदिरों के आसपास विशेष स्वच्छता अभियान, पवित्र नदियों, जलाशयों में दीपदान का आयोजन किया जाएगा। श्रीराम की प्राणप्रतिष्ठा का सजीव प्रसारण देश के प्रमुख मंदिरों में एलईडी के माध्यम से किया जा रहा है। विशेष ट्रेनों से अयोध्या जाने वाले तीर्थ यात्रियों का स्वागत तथा ट्रेनों के प्रस्थान की तिथि पर समारोहपूर्वक पुष्प-वर्षा की जाएगी। इसके अतिरिक्त स्थानीय कलाकारों एवं संस्थाओं के सहयोग से श्रीराम-जानकी जी से संबंधित चित्र, शिल्प, रंगोली आदि का प्रदर्शन किए जाने के साथ आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक परिचर्चा, नृत्य नाटिका, भजन संध्या का आयोजन किया जा रहा है।

रामलला ने ग्रहण किया आसन

अयोध्या में राममंदिर के गर्भगृह में श्रीराम लला के विग्रह को स्थापित कर दिया गया है। एक तरह से सदियों बाद रामलला अपने जन्मस्थान पर विराजित हो चुके हैं। अब 22 जनवरी को प्राण प्रतिष्ठा होनी है। प्राण प्रतिष्ठा के बाद रामलला के पावन विग्रह के दर्शन किए जा सकेंगे।

केंद्र ने किया छुट्टी का एलान

इधर, समारोह को लेकर सरकारी कर्मियों की भावनाओं को देखते हुए दोपहर ढाई बजे तक सभी केंद्रीय दफ्तरों में अवकाश का एलान किया है। इस संबंध में अधिसूचना भी जारी कर दी गई है। केंद्र सरकार ने यह कदम इसलिए उठाया ताकि हर कोई प्राण प्रतिष्ठा का सीधा प्रसारण देख सकें।

पांच लोग रहेंगे मौजूद

प्राण प्रतिष्ठा के समय गर्भगृह में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, राज्यपाल आनंदीबेन पटेल, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, संघ प्रमुख मोहन भागवत और मंदिर के आचार्य (मुख्य पुजारी) मौजूद रहेंगे।

शुभ मुहूर्त में प्राण प्रतिष्ठा

84 सेकंड के अति सूक्ष्म मुहूर्त में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा की जाएगी। काशी के ज्योतिषाचार्य पंडित गणेश्वर शास्त्री द्रविड़ ने ये मुहूर्त चुना है। ये शुभ मुहूर्त का यह क्षण 84 सेकंड का मात्र होगा जो 12 बजकर 29 मिनट 8 सेकंड से 12 बजकर 30 मिनट 32 सेकंड तक होगा।

-प्राण प्रतिष्ठा के बाद भक्तों के लिए श्री राम का दरबार खोल दिया जाएगा, मध्यप्रदेश के भक्तों के लिए बड़ी सौगात

फ्री में फ्लाइट से अयोध्या की यात्रा कराएगी मप्र सरकार

इधर, रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के बाद राम भक्तों के लिए श्री राम का दरबार खोल दिया जाएगा। राम भक्तों में उस दिन को लेकर खासा उत्साह है तो वहीं देश के साथ साथ प्रदेशों की सरकारें भी श्री राम के भक्तों के लिए सुविधाओं कें भंडार खोल रही हैं। इसी कड़ी में मध्य प्रदेश की मोहन सरकार ने एक बड़ा फैसला लिया है। सरकार की ओर से प्रदेश के तीर्थयात्रियों को फ्री में हवाई जहाज से अयोध्या ले जाया जाएगा। प्रदेश के

संस्कृति और धर्मस्व राज्य मंत्री धर्मेंद्र लोधी का कहना है कि श्री राम मंदिर के लोकार्पण के बाद जब राम भक्तों के लिए मंदिर के कपाट सार्वजनिक हो जाएंगे तभी से फ्री यात्राएं शुरू की जाएंगी। प्रदेश सरकार की महत्वाकांक्षी तीर्थ दर्शन योजना का उद्देश्य श्रद्धालुओं को देश के धार्मिक स्थलों के दर्शन कराना है। अब उन्हें और अधिक सुविधा प्रदान करते हुए योजना के तहत वृद्धजनों को फ्री हवाई यात्रा के जरिए अयोध्या के दर्शन कराए जाएंगे।

मंदिर की खूबियां

» मुख्य प्रवेश द्वार 'सिंह द्वार', 12 प्रवेश द्वार
» राजस्थान से आए ग्रेनाइट पत्थरों से बना
» मंदिर पर भूकंप का कोई असर नहीं होगा
» निर्माण में लोहे की रॉड का इस्तेमाल
» पत्थरों को तांबे के पत्तों से जोड़ा गया
» मंदिर के अंदर ही 5 मंदिर, पंचदेव मंदिर
» सूर्य देव मंदिर और विष्णु देवता मंदिर
» 392 स्तंभ, गर्भगृह में 160, प्रथम तल पर 132 स्तंभ
» सिंह द्वार के सामने नृत्य मंडप, रंग मंडप और गूढ़ मंडप

पांच साल में दो लाख नए पैक्स बनाने का टारगेट, देश की हर ग्राम पंचायत में एक ऐसा पैक्स होगा

देश भर में रजिस्टर्ड हो गए 12,000 से अधिक पैक्स

भोपाल। जागत गांव हमार

केंद्र सरकार ने देश में दो लाख नई प्राथमिक कृषि ऋण समितियों को बनाने का लक्ष्य रखा है। जिनमें से 12,000 से अधिक पैक्स रजिस्टर्ड हो चुके हैं। इसका उद्देश्य ग्रामीण अर्थव्यवस्था को गति देना है। सहकारिता के माध्यम से गांव और किसानों को आगे बढ़ाना है। सरकार पैक्स को मल्टी परपज बना रही है। जिसके तहत वो बैंक, गैस एजेंसी, पेट्रोल पंप, जन औषधि केंद्र, अनाज खरीद, भंडारण और सीएससी जैसे 27 तरह के काम कर पाएंगे। नए सुधार के अनुसार, ये क्रेडिट संस्थान न केवल ऋण वितरण में, बल्कि उत्पाद बिक्री प्रणाली में भी भाग ले सकेंगे, जिससे उनकी आय में वृद्धि होगी, ऐसा केंद्र सरकार द्वारा कहा जा रहा है, लेकिन आने वाले समय में यह लक्ष्य कितना हासिल होता है यह देखना अहम होगा।केंद्रीय गृह और सहकारिता मंत्री अमित शाह ने हाल ही में नई दिल्ली में सहकारी समितियों के केंद्रीय रजिस्ट्रार (सीआरसीएस) कार्यालय के नए भवन का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि नए कानूनों के कारण आज सहकारी क्षेत्र में एक नए युग की शुरुआत हुई है। पैक्स की व्यवस्था पारदर्शी हो रही है। शाह ने कहा था कि मल्टीस्टेट कोऑपरेटिव क्रेडिट सोसाइटीज को बैंक में परिवर्तित होने के लिए खुद को तैयार करना चाहिए। हमें इस दिशा में आगे बढ़ना चाहिए जिससे ज्यादा से ज्यादा बैंक मल्टीस्टेट बनें और ज्यादा से ज्यादा मल्टीस्टेट सहकारी संस्थान क्रेडिट सोसाइटी बैंक में परिवर्तित हों। इस बीच, 2020 में 10 और 2023 में 102 नई बहु-राज्य सहकारी समितियां पंजीकृत की गईं। यानी पंजीकरण में 10 गुना वृद्धि हुई है।

दो लाख नए पैक्स बनेंगे

सहकारिता मंत्रालय का लक्ष्य अगले 5 वर्षों में 2 लाख नए प्राथमिक कृषि ऋण संस्थान बनाने का है। देश की प्रत्येक ग्राम पंचायत में एक ऐसा पैक्स होगा जो कई तरह के काम करके ग्रामीण अर्थवयवस्था को बढ़ाने का काम करेगा। पहले पैक्स उपनियमों में कृषि ऋण के अलावा किसी अन्य कार्य को शामिल करने का कोई प्रावधान नहीं था। अब इसमें बदलाव करके उन्हें बहु आयामी बनाया गया है। आज देश की सभी पैक्स ने मॉडल अधिनियम को अपना लिया है। मॉडल सब-एक्ट के तहत नए पैक्सों का भी संचालन किया जा रहा है।

सस्ती दवाएं भी उपलब्ध करवा रहे पैक्स

फिलहाल एलपीजी डीलरशिप के लिए भी पैक्स को प्राथमिकता देने का फैसला किया गया है। पेट्रोलियम मंत्रालय ने पेट्रोल पंपों के कामकाज में आने वाली सभी बाधाओं को दूर कर दिया है। अब पैक्स पेट्रोल पंप भी चला सकेंगे। इसके अलावा लगभग 27 राज्यों ने पैक्स को हर परिवार के लिए हर घर नल से जल अभियान से जुड़ने और यह काम करने की भी मंजूरी दे दी है। इसके साथ ही पैक्स सस्ती दवा दुकानें और राशन दुकानें भी चला सकेंगे। आज देश में 35000 पैक्स उर्वरक वितरण से जुड़े हैं। गुजरात, जम्मू-कश्मीर, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल और उत्तर पूर्वी राज्यों में लगभग 2300 प्राथमिक सहकारी समितियां सस्ती कीमत पर दवाएं उपलब्ध करा रही हैं।

फलों, सब्जियों, मसालों, फूलों व शहद के उत्पादन में वृद्धि अनुमानित

बागवानी फसलों का होगा रिकॉर्ड तोड़ उत्पादन

बागवानी फसलों का उत्पादन 355.25 मिलियन टन होने का अनुमान

भोपाल। जागत गांव हमार

कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय ने वर्ष 2022-23 के लिए विभिन्न बागवानी फसलों के क्षेत्रफल और उत्पादन का तीसरा अग्रिम अनुमान जारी कर दिया है। वर्ष 2022-23 में कुल बागवानी उत्पादन 355.25 मिलियन टन होने का अनुमान है, जो कि वर्ष 2021-22 (अंतिम) की तुलना में लगभग 8.07 मिलियन टन अधिक है।

अगर पतिशत में बात करें तो 2.32 फीसदी की वृद्धि दर्ज की गई है। केंद्रीय कृषि मंत्री अर्जुन मुंडा ने कहा है कि देश में लगातार बढ़ रहे बागवानी उत्पादन की यह उपलब्धि हमारे किसान भाइयों-बहनों व वैज्ञानिकों की मेहनत तथा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार की कृषि और किसान हितैषी अच्छी नीतियों का परिणाम है। राज्यों और अन्य सरकारी एजेंसियों से प्राप्त सूचना के आधार पर संकलित वर्ष 2022-23 के तीसरे अग्रिम अनुमान के अनुसार फलों, सब्जियों, रोपण फसलों, मसालों, फूलों व शहद के उत्पादन में वृद्धि अनुमानित है।

अनाज वाली फसलों के बाद बागवानी फसलों के उत्पादन में उछाल अपने आप में कृषि क्षेत्र की तरक्की की कहानी बता रहा है। हरियाणा और महाराष्ट्र जैसे कई राज्य अपने यहां पारंपरिक फसलों की बजाय बागवानी का एरिया बढ़ा रहे हैं, क्योंकि बागवानी में ज्यादा लाभ मिलने की संभावना रहती है। आलू का उत्पादन बढ़ने और टमाटर का घटने का अनुमान है।

इस तरह बढ़ा एरिया और उत्पादन

केंद्रीय कृषि मंत्रालय के अनुसार 2021-22 में बागवानी फसलों का एरिया 28.04 मिलियन हेक्टेयर था। जो 2022-23 के तीसरे अग्रिम अनुमान में 28.34 मिलियन हेक्टेयर हो गया। अभी अंतिम अनुमान आते-आते एरिया के आंकड़े में बदलाव हो सकता है। दूसरी ओर 2021-22 के बागवानी फसलों का 347.18 मिलियन टन उत्पादन हुआ था, जो 2022-23 के तीसरे अग्रिम अनुमान में 355.25 मिलियन टन होने का अनुमान है। यानी पहले के मुकाबले एरिया और उत्पादन दोनों में उछाल है।

फसल वार उत्पादन

- फलों का उत्पादन वर्ष 2021-22 में 107.51 मिलियन टन से बढ़कर वर्ष 2022-23 में 109.53 मिलियन टन होने का अनुमान है।
- सब्जियों का उत्पादन वर्ष 2022-23 में 213.88 मिलियन टन होने का अनुमान है, जबकि वर्ष 2021-22 में उत्पादन 209.14 मिलियन टन था।
- रोपण फसलों का उत्पादन वर्ष 2021-22 में 15.76 मिलियन टन से बढ़कर वर्ष 2022-23 में 16.84 मिलियन टन होने का अनुमान है। यानी 6.80 फीसदी की वृद्धि अनुमानित है।
- आलू का उत्पादन वर्ष 2022-23 में 60.22 मिलियन टन होने की उम्मीद है, जबकि वर्ष 2021-22 में उत्पादन 56.18 मिलियन था। यानी उत्पादन बढ़ेगा।
- टमाटर का उत्पादन वर्ष 2021-22 में 20.69 मिलियन टन की अपेक्षा वर्ष 2022-23 में 20.37 मिलियन टन होने की उम्मीद है। यानी इसका उत्पादन घटेगा।

-रीवा का मामला: सरकार ने दिए वसूली के आदेश

पंचायत में विकास के नाम पर 43 लाख का भ्रष्टाचार

जिला पंचायत सीईओ ने पूर्व महिला सरपंच पर की कार्रवाई

रीवा। जागत गांव हमार

जिला पंचायत सीईओ संजय सौरभ सोनवणे ने भ्रष्टाचार के मामले में 43.50 लाख की वसूली के आदेश दिए हैं। यह कार्रवाई मध्यप्रदेश पंचायत राज एवं ग्राम स्वराज अधिनियम 1993-94 की धारा 89 की सुनवाई के बाद हुई है। तत्कालीन सरपंच सहित संलिप्त शासकीय कर्मचारियों और इंजीनियरों को भी दोषी पाया गया है। राशि की भरपाई के लिए सात दिन का समय भी दिया गया था, लेकिन समय अवधि अब पूर्ण हो गई है। शिकायतकर्ता शिवानंद द्विवेदी ने बताया कि गंगेव जनपद के ग्राम पंचायत चौरी में स्टाप डैम, पीसीसी सड़क, पुलिया, पानी की टंकी, चबूतरा, सेग्रीगेशन शेड और पुलिया के निर्माण कार्यों में जमकर धांधली की गई थी। मामले की जांच ग्रामीण यांत्रिकी सेवा के तत्कालीन कार्यपालन यंत्री आरएस धुर्वे, एसडीओ एसआर प्रजापति और जितेंद्र की तीन सदस्यीय कमेटी ने की थी। आरोपियों को सुनवाई का अवसर प्रदान किया गया।

जिला पंचायत सीईओ ने की कार्रवाई

जिला पंचायत सीईओ खुद भी ग्राम पंचायत चौरी में भ्रष्टाचार की जांच करने के लिए गए थे। जांच के बाद उन्होंने 43.50 लाख की वसूली के आदेश जारी किए हैं। तत्कालीन सरपंच सविता जायसवाल से 16. 5 लाख, तत्कालीन सचिव बुद्धसेन कोल से 4.6 लाख, तत्कालीन सचिव सुनील गुप्ता से 3.98 लाख, वर्तमान ग्राम रोजगार सहायक और तत्कालीन प्रभारी सचिव आरती त्रिपाठी से 10.73 लाख, तत्कालीन उपयंत्री डोमिनिक कजूर से 1.25 लाख, तत्कालीन उपयंत्री अजय तिवारी से 3.48 लाख, तत्कालीन सहायक यंत्री स्वर्गीय अनिल सिंह से 3.48 लाख रुपये की वसूली के आदेश किए गए हैं।

साप्ताहिक

जागत गांव हमार

पंचायत की विकास गाथा, सरकार तक

RNI-MPHIN/2015/72544

चौपाल से भोपाल तक

भोपाल, सोमवार, 22-28 जनवरी 2024 वर्ष-9, अंक-40

भोपाल, इंदौर, उज्जैन, सागर, मुरैना, रीवा, शिवपुरी से एक साथ प्रकाशित

पृष्ठः-8,मूल्यः- 2 रुपए

मध्यप्रदेश सहित देश में बीते एक दशक में 10 फीसदी कम बारिश की गई दर्ज

30 फीसदी जिलों में कम बारिश वाले वर्ष

मानसूनी बारिश में गिरावट से किसानों की मुरझाई उम्मीद

भोपाल। जागत गांव हमार

बीते कुछ दशकों में देश के कुछ हिस्सों में मानसूनी बारिश में गिरावट देखी गई है। दिल्ली स्थित एनर्जी इनवॉयरमेंट और वॉटर काउंसिल ने 40 वर्षों के दौरान मॉनसूनी में बदलाव का मूल्यांकन किया है और पाया कि सिंधु-गंगा के मैदानी इलाकों, पूर्वोत्तर भारत और हिमालयी क्षेत्र में पिछले दशक में मानसूनी बारिश में 10 फीसदी की कमी देखी गई है। रिपोर्ट के अनुसार 40 वर्षों के दौरान देश के 30 फीसदी जिलों में कम बारिश वाले वर्ष देखे गए। नई दिल्ली, बेंगलुरु, नीलगिरी, जयपुर, कच्छ और इंदौर सहित कम से कम 23 फीसदी जिलों में अत्यधिक बारिश वाले साल देखे गए।

40 वर्षों के दौरान मानसून में बदलाव का मूल्यांकन

एनर्जी इनवॉयरमेंट और वॉटर काउंसिल ने 40 वर्षों के दौरान मानसूनी में बदलाव का मूल्यांकन किया है। इस दौरान जून-सितंबर में दक्षिण-पश्चिम मानसूनी के दौरान बारिश की घटती प्रवृत्ति 40 वर्षों में तहसीलों में लगभग 11 प्रतिशत है। जबकि, सिंधु-गंगा के मैदान, पूर्वोत्तर भारत और हिमालयी क्षेत्र की तहसीलों, मंडलों में क्लाइमेट बेसलाइन 1982-2011 की तुलना में पिछले दशक 2012-2022 में 10 प्रतिशत की कमी देखी गई है।

देश की तहसीलों में मानसूनी बारिश का पैटर्न

एनर्जी इनवॉयरमेंट और वॉटर काउंसिल के श्रवण प्रभु और विश्वास चितले के डिकोडिंग इंडियाज चेंजिंग मानसून पैटर्न-ए तहसील लेवल असेसमेंट आकलन के अनुसार देश की जिन तहसीलों में मानसूनी बारिश में कमी देखी गई उनमें से अनुमानित 68 प्रतिशत में सभी महीनों के दौरान मानसूनी की वर्षा प्रभावित हुई है, जबकि, 87 प्रतिशत में जून और जुलाई के महत्वपूर्ण महीनों के दौरान मानसूनी बारिश में गिरावट देखी गई। देश की सभी तहसीलों में से लगभग 64 प्रतिशत में पिछले दशक में भारी वर्षा वाले दिनों में प्रति वर्ष 115 फीसदी की वृद्धि देखी गई है। यह पैटर्न सर्वाधिक घरेलू उत्पादन वाले राज्यों महाराष्ट्र, तमिलनाडु, गुजरात और कर्नाटक में प्रमुख रहा है।

40 में से 29 वर्षों में सामान्य मानसूनी बारिश हुई

पिछले 40 वर्षों में देश में जून-सितंबर के दौरान 29 वर्षों में सामान्य बारिश, नौ वर्षों में सामान्य से अधिक और तीन वर्षों में सामान्य से कम मानसूनी वर्ष देखा गया। इस दौरान अनुमानित 30 फीसदी जिलों में कम बारिश वाले वर्ष देखे गए और 38 फीसदी जिलों में अधिक संख्या में अत्यधिक वर्षा वाले वर्ष देखे गए। नई दिल्ली, बेंगलुरु, नीलगिरी, जयपुर, कच्छ और मप्र के इंदौर सहित कम से कम 23 फीसदी जिलों में अत्यधिक बारिश वाले साल देखे गए। पिछले दशक क्लाइमेट बेसलाइन 2012-2022 के दौरान 55 फीसदी तहसीलों में 10 फीसदी की वृद्धि देखी गई, जबकि, राजस्थान, गुजरात, मध्य महाराष्ट्र और तमिलनाडु के कुछ हिस्सों की तहसीलों में बारिश में गिरावट देखी गई।

तेलंगाना, आंध्र और तमिलनाडु में बारिश में वृद्धि

तमिलनाडु की लगभग 80 प्रतिशत तहसीलों में 2012-22 में नॉर्थईस्ट मानसूनी वर्षा में 10 फीसदी से अधिक की वृद्धि हुई है। तेलंगाना में 44 प्रतिशत और आंध्र प्रदेश में 39 प्रतिशत अधिक बारिश हुई है। पश्चिमी तट पर महाराष्ट्र और गोवा की तहसीलों और पूर्वी तट पर ओडिशा और पश्चिम बंगाल में अक्टूबर-दिसंबर में होने वाली बारिश में वृद्धि देखी गई है। मासिक बदलाव विश्लेषण से संकेत मिलता है कि देश में लगभग 48 प्रतिशत तहसीलों में अक्टूबर में 10 प्रतिशत से अधिक वर्षा देखी गई, जो पूर्ववर्ती दक्षिण-पश्चिम मॉनसूनी की देरी से वापसी के कारण हुई।

रेट बढ़ने से किसानों के चेहरे पर आई रौनक

एथेनाल कंपनियों को भाया मध्यप्रदेश का मक्का

» छिंदवाड़ा जिले में मक्के की पूछ-परख बढ़ गई

» दाम 2265 रुपए प्रति क्विंटल तक पहुंच गए

भोपाल। जागत गांव हमार

मक्के की बंपर पैदावार के बाद भी सीजन में कम रेट मिलने से कार्न सिटी छिंदवाड़ा के किसानों के चेहरे मुरझा गए थे, लेकिन अब फिर रौनक लौट आई है। ऐसा एथेनाल बनाने वाली बालाघाट व गुरुग्राम की कंपनियों द्वारा यहां के मक्के की खरीदी के लिए आगे आने के कारण हुआ है।

मक्के की पूछ-परख बढ़ गई है और दाम 2265 रुपए प्रति क्विंटल तक पहुंच गए हैं। अनाज व्यापारी संघ के अध्यक्ष प्रतीक शुक्ला ने बताया कि जिले में इस साल आठ लाख क्विंटल मक्के की पैदावार हुई है। एथेनाल कंपनियों के अलावा शहर में स्टार्च फैक्ट्रियां भी मक्का खरीद रही हैं। दिसंबर तक मक्का की पूछ परख कम हो चुकी थी, लेकिन जनवरी से उसके दाम में काफी इजाफा हो गया।

2265 रुपए क्विंटल

कृषि उपज मंडी में जिस मक्का के अधिकतम दाम 2123 रुपए प्रति क्विंटल थे, अब वही मक्का 142 रुपए प्रति क्विंटल बढ़कर 2265 रुपए तक बिक रहा है। छिंदवाड़ा शहर में भी स्टार्च फैक्ट्रियों ने सीधे किसानों से मक्का लेना शुरू कर दिया है।

कार्न सिटी का तमगा

गौरतलब है कि छिंदवाड़ा जिले को कार्न सिटी का तमगा हासिल है। मक्का का बंपर उत्पादन होने के कारण छिंदवाड़ा में साल 2018 और 2019 में कार्न फेस्टिवल का आयोजन किया गया था, जिसमें देश और विदेश से कृषि वैज्ञानिकों के अलावा कई बड़ी हस्तियों ने शिरकत की। इस वर्ष मक्के का रकबा 2.50 लाख हेक्टेयर रहा।

कृषि मंत्री कंसाना ने मंडी बोर्ड के अध्यक्ष का संभाला कार्यभार

मध्यप्रदेश की मंडियों को हाईटेक मंडी के रूप में करें विकसित

भोपाल। जागत गांव हमार

किसान कल्याण एवं कृषि विकास कृषि मंत्री ऐदल सिंह कंषाना ने मंडी बोर्ड के अध्यक्ष का कार्यभार ग्रहण किया। उन्होंने मंडी बोर्ड की नवीन वेबसाइट का शुभारंभ कर अधिकारियों के साथ मंडी बोर्ड के कार्यों की समीक्षा की। कृषि मंत्री तथा मप्र राज्य कृषि विपणन (मंडी) बोर्ड के पदेन अध्यक्ष कंषाना ने बोर्ड की नवीन वेबसाइट का शुभारंभ किया। वेबसाइट पर किसानों के लिए उपयोगी समस्त जानकारियों का समावेश किया गया है। कृषि तथा मंडियों से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारियों का प्रसार उक्त वेबसाइट पर किया गया है। कृषि मंत्री ने मंडी बोर्ड के अधिकारियों का निर्देशित किया कि मंडियों को हाईटेक मंडी के रूप में विकसित करने के लिए समुचित आवश्यक कार्रवाई सुनिश्चित करें।

तत्काल भुगतान हो, गतिविधियों से अवगत कराया

कृषि मंत्री ने कहा कि मंडी में आने वाले कृषकों को कोई असुविधा न हो तथा उनकी उपज की त्वरित नीलाम हो। सही तौल हो तथा तत्काल भुगतान हो। ऐसी व्यवस्था मंडियों में करनी है। मंत्री कंषाना ने कृषक भाइयों के लिए मंडियों में सर्व सुविधायुक्त कृषक विश्रामगृह इलेक्ट्रॉनिक तौल कांटों की सुविधा सुनिश्चित करने को कहा है। बैठक में मंडी बोर्ड के आयुक्त सह प्रबंध संचालक श्रीमन् शुक्ला ने प्रेजेंटेशन देकर मंडी बोर्ड द्वारा संचालित की जा रही समस्त गतिविधियों से अवगत कराया। बैठक में मंडी बोर्ड के अपर संचालक गौतम सिंह, एसबी सिंह, चंद्रशेखर वशिष्ठ, आरआर अहिरवार, अधीक्षण यंत्री डीएस राठौर, संयुक्त संचालक संगीता ढोके, चीफ प्रोग्रामर संदीप चौबे और अधिकारी कर्मचारी उपस्थित रहे।

खुशहाली और संपन्नता के युग, राम के युग में कैसी थी खेती किसानी

डॉ. सत्येंद्र पाल सिंह

प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख कृषि विज्ञान केंद्र, लहार (भिंड) म.प्र.

हिन्दू संस्कृति में राम द्वारा किया गया आदर्श शासन राम राज्य के नाम से प्रसिद्ध है। राम के राज्य में जनता हर तरह से सुखी और समृद्ध थी। लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा के लिए सबकुछ दांव पर लगा दिया जाता था। जीने का अधिकार और सुरक्षा-न्याय का अधिकार सभी को मिला था। राम के त्रेता युग में भारत में खेती किसानी बहुत ही उन्नत किस्म की मानी जाती थी।

त्रेता युग में किसान खेती में खाद्यान्न से लेकर दलहन, तिलहन आदि सभी प्रमुखता से उगाते थे उस दौर में खेती-किसानी के साथ गोपालन भी लोगों द्वारा किया जाता था। माना जाता है कि राम के दौर में फसलों में रोग, बीमारियां और कीटों का प्रकोप नहीं होता था। जिसके चलते किसानों को भरपूर उत्पादन प्राप्त होता था। यही कारण है कि उस समय चारों ओर खुशहाली और संपन्नता थी।

आजकल पूरा देश राममय हो रहा है। अयोध्या से लेकर देश के प्रत्येक राज्य, गांव, शहर, कस्बों, घर और गलियों तक सब जगह सिर्फ राम की ही चर्चा है। राम की चर्चा हो भी क्यों ना 500 सालों के लंबे इंतजार और लाखों लोगों द्वारा राम मंदिर के लिए अपने प्राणों की आहुति देने के बाद रामलला अपने भव्य और दिव्य मंदिर में विराज रहे हैं। राम भारत के कण-कण में बसते हैं, राम भारत की आत्मा हैं, राम भारत के प्राण हैं। राम के बिना भारतीय संस्कृति की कल्पना करना ही बेमानी है। ऐसे समय पर जब भारत में चारो और राम-राम हो रहा है तब यह विचार आना लाजमी है क्या राम के समय में रामराज्य के दौरान भारत में खेती किसानी होती थी। यदि होती थी तो किस प्रकार से किसानों द्वारा की जाती थी। भारत अनादि काल से ही एक कृषि प्रधान देश माना जाता रहा है। भारत में खेती कब से प्रारंभ हुई क्या भगवान राम और कृष्ण काल में भी किसान खेती-किसानी करते थे। इसके पर्याप्त प्रमाण पौराणिक उल्लेखों में मिलते हैं। जिसके अनुसार भारत में कृषि कार्य राम और कृष्ण युग के पहले से ही किए जाने का उल्लेख है। उल्लेखों के अनुसार उस समय लोग खेत जोतकर उसमें अनाज, सब्जी के साथ ही गोपालन-बकरी पालन भी मुख्य रूप से करते थे। संसार की प्रथम पुस्तक ऋग्वेद के प्रथम मण्डल में उल्लेख मिलता है कि अश्विन देवताओं ने राजा मनु को हल चलाना सिखाया था। ऋग्वेद में एक स्थान पर अपाला ने अपने पिता अत्री से खेतों की समृद्धि के लिए प्रार्थना की थी।

अथर्ववेद के एक प्रसंग के अनुसार सर्वप्रथम राजा पृथुवेंय ने ही कृषि कार्य शुरू किया था। इतना ही नहीं अथर्ववेद में 6, 8 और 12 बैलों की जोड़ी से हल जोतने का वर्णन भी मिलता है। यजुर्वेद में पांच प्रकार के चावल के मिलने का उल्लेख है। जिसमें यथाक्रम, महाव्रीहि, कृष्णव्रहि

शुक्लावृहि, आशुधान्य और हायन प्रमुख चावल की प्रजातियां थी। इससे यह सिद्ध होता है कि वैदिक काल में चावल की खेती भी होती थी। रामायण काल में राजा जनक को एक खेत से हल चलाते वक्त ही भूमि से माता सीता मिली थी। इसी प्रकार महाभारत में बलराम जी को हलधर कहा जाता था। उनके कंधे पर हमेशा एक हल शस्त्र के रूप में विराजमान रहता था। इससे यह सिद्ध होता है कि उस काल में भी खेती किसानी बहुत उन्नत थी।

पौराणिक उल्लेखों के अनुसार सिंधु घाटी की सभ्यता को बहुत ही उन्नत और सभ्य माना गया है। सिंधु घाटी की सभ्यता उस कालखंड की एक ऐसी सभ्यता रही है जो पूर्णतयः आत्मनिर्भर और स्थापित सभ्यता थी। सिंधु घाटी की सभ्यता से प्राप्त अवशेषों से पता चलता है कि उस दौर के लोग दूर तक व्यापार करने जाते थे और यहां पर भी दूर-दूर से व्यापारी आते थे। लगभग 8000 वर्ष पूर्व सिंधु घाटी सभ्यता के लोग धर्म, ज्योतिष, कृषि, पशुपालन और विज्ञान की बहुत अच्छी समझ रखते थे। उल्लेखों के अनुसार उस दौर के लोग नगरों के निर्माण से लेकर जहाज तक भी बनाना जानते थे। इस काल में लोग जहाज, रथ, बैलगाड़ी, आदि यातायात के साधनों का अच्छे से प्रयोग करना सीख गए थे। सिंधु सभ्यता के लोगों को आर्य द्रविड़ कहा जाता है। आर्य और द्रविड़ में किसी भी प्रकार का फर्क नहीं है। यह डीएनए और पुरातात्विक शोध से सिद्ध हो चुका है। सिंधु घाटी सभ्यता के लोग कृषि कार्य करने के साथ ही गोपालन और बकरी पालन के साथ अन्य कई तरह के व्यापार भी करते थे।

कृषि के विकास पर बात की जाए तो कम से कम 7000 से 13000 ईशा वर्ष पूर्व ही खेती का विकास हो चुका था। तब से लेकर अब तक खेती में बहुत ही महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। उल्लेखों के अनुसार आदम व्यवस्था में मनुष्य जंगली जानवरों का शिकार कर अपनी उदर पूर्ति करता था। इसके पश्चात उसने कंद-मूल, फल और स्वतः उगे अन्न का प्रयोग आरंभ किया। इसके बाद धीरे-धीरे वह खेती तथा अन्न उत्पादन करने लगा। विश्व में प्राप्त कई तथ्यों और खोज के बाद पता चला है कि मनुष्य पूर्व पाषाण युग से ही खेती से परिचित हो गया था। बैलों को हल में लगाकर जोतने का प्रमाण मिश्र की पुरातन सभ्यता से भी मिलता है। भारत में पाषाण युग में कृषि का विकास कितना हुआ इसकी कोई स्पष्ट जानकारी तो नहीं है परंतु सिंधु नदी के पुरावशेष के उत्खनन से इस बात के प्रचुर प्रमाण मिले हैं कि आज से 7000 वर्ष पूर्व भारत मैं कृषि उन्नत अवस्था में थी। इतना ही नहीं उस दौर में लोग राजस्व को भी अनाज के रूप में ही चुकाते थे। मोहनजोदड़ो की सभ्यता से मिले प्रमाणों में भी गेहूं और जौ का उल्लेख मिलता है। पुरातन काल में मोटे अनाजों की खेती का भी विशेष रूप से उल्लेख मिलता है। ज्वार, बाजरा, कोंदों, कुटकी, कंगनी, चीना, सवां आदि मोटे अनाज पुरातन काल से ही भारत में उगाये जा रहे हैं।

राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा के लिए खतरा बन सकता है नैनो यूरिया

» डॉ. अनीता तिवारी
» डॉ सुलोचना सेन
» डॉ सुमन संत
» डॉ अभिलाषा सिंह

पशु जन स्वास्थ्य एवं महामारी विभाग, पशु आनुवंशिकी एवम प्रजनन विभाग, पशु चिकित्सा एवम पशुपालन विस्तार शिक्षा विभाग, पशु पोषण विभाग, पशुचिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय, रीवा

पानी जो एक जीवन देने वाला तरल है वह एक जीवन लेने वाला घातक तरल पदार्थ भी हो सकता है। दुनिया में लगभग 3.1प्रतिशत मौतें पानी की गन्दी और खराब गुणवत्ता के कारण होती हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन का अनुमान है कि दुनिया भर में 80प्रतिशत बीमारियाँ जल द्वारा उत्पन्न होती है। जलजनित रोग विश्व की जनसंख्या के लिए, विशेष रूप से विकासशील देशों में एक प्रमुख चुनौती हैं। मानसून मौसम में खासतौर पर रुके हुए पानी की वजह से पानी से फैलने वाली संक्रामक बीमारियों की संभावना कई गुना बढ़ जाती है।

पानी से फैलने वाली इन बीमारियों के इलाज के लिए अक्सर लोग डॉक्टर की सलाह के बिना एंटी-बायोटिक दवाओं का इस्तेमाल करते हैं। जो की बहुत ही गलत आदत है और यह आदत अन्य बहुत सी गंभीर समस्याओ को बढ़ावा दे सकती है। जैसे की रोगाणुरोधी प्रतिरोध या एंटीबायोटिक रेजिस्टेंस।

जलजनित रोग के कारण: जल की गुणवत्ता का खराब हो जाती है जब वह औद्योगिक अपशिष्ट, मानव अपशिष्ट, पशु अपशिष्ट, कचरा, अनुपचारित मल, रासायनिक अपशिष्ट आदि से प्रदूषित हो जाती है। ऐसे प्रदूषित पानी को पीने या इससे खाना पकाने से जल जनित रोग और संक्रमण हो जाता है। ये बीमारियाँ नहाने, कपड़े धोने, या दूषित पानी के संपर्क में आने से भी फैल सकती हैं। इसलिए, स्वच्छ पेयजल और स्वच्छता में कमी किसी समुदाय में जलजनित बीमारियों के फैलने का प्रमुख कारण है।

दूषित पानी से पैदा होने वाली बीमारियाँ: गैस्ट्रोएंट्राइटिस- इसे फूड प्वॉइजनिंग या भोजन विषाक्तता भी कहा जाता है। इस रोग में पेट और छोटी तथा बड़ी आंतों की परत में सूजन हो जाती है। मानसून में हवा में नमी बढ़ने के कारण भोजन में बैक्टीरिया जल्दी पनपते हैं। इसके लक्षण हैं पेट में मरोड़ पड़ना, उल्टी, पेचिस, अस्वस्थ या बुखार महसूस करना, सुस्ती और शरीर में दर्द, गंभीर मामलों में मल में रक्त या मवादआदि। यह रोग दूषित भोजन या पानी के संपर्क में आने और बैक्टीरिया, वायरल, फंगल और परजीवी के कारण हो सकता है।

टाइफॉयड बुखार (आंत्र ज्वर): यह एक जीवाणु जनित संक्रमण है जो दूषित पानी या भोजन के कारण होता है। यह आँतों के रास्ते को प्रभावित करता है और बाद में रक्तप्रवाह में फैल जाता है। इसे आँतों का के रूप में भी जाना जाता है क्योंकि यह मुख्य रूप से हमारी आंतों को प्रभावित करता है। टाइफॉय्ड बुखार के संकेत और लक्षण इस प्रकार है- बुखार आना और ठंड लगाना, सिरदर्द , दस्त के साथ पेट दर्द, जी मिचलाना और उल्टी आना, कमज़ोरी और भूख न लगना, लिवर में सूजन, बेहोसी से अवस्था होना, नकसीर फूटना आदि। जल्दी ठीक होने में मदद करने के लिए, नियमित दवा के साथ घरेलू नुस्खे आज़माएं जैसे की ज़्यादा तरल पदार्थ पिएं, ठंडी पट्टी का इस्तेमाल करें, उबला पानी पिए, पचाने में आसान भोजन करे।

हैजा: यह एक जानलेवा बीमारी है, जो मानसून में फैलती है। यह अनहाइजीनिक/ गंदी परिस्थितियों, संदूषित भोजन और पानी के कारण होती है। यह जीवाणु आमतौर पर संक्रमण वाले व्यक्ति के मल से दूषित भोजन या पानी में पाया जाता है। यह बैक्टीरिया/ जीवाणु भोजन द्वारा शरीर में जाके आंतों में एक विष छोड़ता है जो गंभीर दस्त पैदा करता है । इसके आम लक्षण हैं- गंभीर दस्त, उल्टी, जिसकी वजह से शरीर से पानी बहुत अधिक मात्रा में निकल जाता है। मांसपेशियों में ऐंठन होने लगती है। दस्त के कारण कुछ ही घंटों में डिहाइड्रेशन और इलेक्ट्रोलाइट असंतुलन हो जाता है। हैजा के मामले में तुरंत इलाज की जरूरत होती है, क्योंकि इससे कुछ ही घंटों के अंदर मरीज की मृत्यु हो सकती है।

पीलिया: यह रोग बहुत ही सूक्ष्म विषाणु (वाइरस) से होता है। शुरू में जब रोग धीमी गति से व मामूली होता है तब इसके लक्षण दिखाई नहीं पडते हैं, परन्तु जब यह उग्र रूप धारण कर लेता है तो रोगी की आंखे व नाखून पीले दिखाई देने लगते हैं और त्वचा पीली पड़ जाती है। लोग इसे पीलिया कहते हैं। ये वायरस रोगी के मल में होतें है पीलिया रोग से पीडित व्यक्ति के मल से, दूषित जल, दूध अथवा भोजन द्वारा इसका प्रसार होता है। इसमें मुख लक्षण है - रोगी को बुखार और शरीर में दर्द रहना, भूख न लगना, चिकनाई वाले भोजन से अरूचि, जी मिचलाना और कभी कभी उल्टियाँ होना, सिर में दर्द।

हेपेटाइटिस ए: हेपेटाइटिस ए लीवर का रोग है जो वायरस हेपेटाइटिस ए के कारण होता है। जब आप दूषित पानी या भोजन के संपर्क में आते हैं। हेपेटाइटिस ए होने पर बुखार, अस्वस्थता, भूख न लगना, दस्त, मतली, पेट में दर्द, गहरे रंग का मूत्र और पीलिया जैसे लक्षण होते हैं।

अन्य मुख्य बीमारियां: इनके अलावा दूषित पानी से होने वाले रोग हैं - अमिबायसिस, जिआर्डियासिस, टोक्सोप्लास्मोसिस, शिगेलोसिस, गिनी-कृमि रोग, हेपेटाइटिस ई जैसे विषाणु, इ.कोली संक्रमण आदि।

जलजनित रोग से बचाव के लिए सावधानियां: सुनिश्चित करें कि पानी बिल्कुल साफ और रेत और मिटटी से मुक्त हो। दिखाई पड़ने वाली गंदगी को हटाने के लिए पानी को छान लें। केवल साफ और सुरक्षित पानी पिएं - पीने के लिये पानी नल, हैण्डपम्प या आदर्श कुओं को ही काम में लें। मानसून मौसम में उबला या प्यूरीफायर का पानी पीने की सलाह दी जाती है ताकि पानी के कारण होने वाली बीमारियां न फैलें। सुनिश्चित करें कि संग्रहित पानी रोगाणु रहित हो। घर के आसपास गंदगी जमा न होने दें। खुले में शौच न जाये, स्वच्छ शौचालय का प्रयोग करें। मल, मूत्र, कूडा करकट सही स्थान पर गड्ढा खोदकर दबाना या जला देना चाहिये।

जहां तक हो सके, बाहर का खाना न खाएं जब भी बाहर का खाना खाएं तो डिस्पोजेबल ग्लास और प्लेट्स का इस्तेमाल करें, खासकर स्ट्रीट फूड। खाना बनाने, परोसने, खाने से पहले व बाद में और शौच जाने के बाद में हाथ साबुन से अच्छी तरह धोना चाहिए।

घटा दलहन फलों की बोवनी का रकबा, उत्पादन पर पड़ेगा असर

भले ही देश भर में रबी फसलों की बुआई लगभग पूरी हो चुकी है, लेकिन दालों की बुआई का रकबा पिछले वर्ष की तुलना में 19 जनवरी 2024 तक 7 लाख हे. से अधिक कम है। कृषि मंत्रालय द्वारा प्रकाशित आंकड़ों के अनुसार, फसल सीजन 2023-24 में रबी फसलों की कुल बुआई में तेजी आई है, लेकिन दालों की बुआई अभी भी पिछड़ रही है। 19 जनवरी तक दालों की बुआई का रकबा 15.51 मिलियन हे. दर्ज किया गया, जबकि पिछले रबी सीजन में यह 16.26 मिलियन हे. था। देश में आमतौर पर रबी की फसलें दिसंबर के आखिरी सप्ताह तक बोई जाती हैं। पिछले सीजन की तुलना में चालू सीजन का बुआई रकबा 251,000 हे. कम है। रबी फसलों की बुआई का कुल क्षेत्रफल 68.36 मिलियन हे. है, जबकि पिछले साल यह 68.61 मिलियन हे. था। रबी की मुख्य फसल गेहूं की बुआई में पिछले कुछ हफ्तों में तेजी आई है और वर्तमान में इसकी बुआई 34 मिलियन हेक्टेयर में हो चुकी है, जो पिछले सीजन से 558,000 हेक्टेयर अधिक है। सरकार ने 2022-23 में 110.5 मिलियन टन के अनुमानित उत्पादन के मुकाबले, 2023-24 फसल वर्ष के लिए रिकॉर्ड 114 मिलियन टन (एमटी) का गेहूं उत्पादन का लक्ष्य निर्धारित किया है। इस वर्ष अनियमित वर्षा और मिट्टी में नमी की कमी के कारण रबी सीजन की शुरुआत देरी से हुई। भारत मौसम विज्ञान विभाग के आंकड़ों के अनुसार, देश में 49 प्रतिशत वर्षा की कमी है और यह मौजूदा सूखा किसानों के लिए चिंता का कारण है।

रबी फसलों की सिंचाई मुख्यतः जलाशयों और भूजल के माध्यम से की जाती थी। 18 जनवरी तक 150 प्रमुख जलाशयों में उपलब्ध लाइव स्टोरेज 99.181 बिलियन क्यूबिक मीटर था, जो इन जलाशयों की कुल स्टोरेज क्षमता का 55 प्रतिशत है। हालांकि, पिछले वर्ष, इसी अवधि के लिए इन जलाशयों में उपलब्ध भंडारण 121.202 बीसीएम था और पिछले 10 वर्षों का औसत भंडारण 104.29 बीसीएम था। दालों में चना की खेती सबसे अधिक प्रभावित हुई है। यह फसल मुख्य रूप से रबी मौसम के दौरान बोई जाती है। आंध्र प्रदेश, गुजरात, कर्नाटक, महाराष्ट्र और झारखंड जैसे राज्यों में चने के रकबे में कमी दर्ज की गई है। पिछले कुछ वर्षों में रबी सीजन में उगाए जाने वाले धान का रकबा भी कम हो गया है। हालांकि रबी सीजन में धान कुछ ही क्षेत्रों में लगाया जाता है, लेकिन इसका सामान्य (पिछले पांच वर्षों में औसत क्षेत्र) रकबा लगभग 5.25 मिलियन हेक्टेयर है। लेकिन पिछले कुछ वर्षों में रबी चावल में उल्लेखनीय कमी देखी गई है। इस बार, फसल का क्षेत्रफल 2.82 मिलियन हेक्टेयर दर्ज किया गया, जो 2022-23 से 109,000 हेक्टेयर कम है।

सहकारिता मंत्री विश्वास कैलाश सारंग ने की राज्य सहकारी बैंक की समीक्षा, अफसरों से कहा

मध्यप्रदेश के सहकारी बैंकों को कॉर्पोरेट जगत से जोड़ा जाए

भोपाल। जागत गांव हमार

सहकारिता मंत्री विश्वास कैलाश सारंग ने मध्यप्रदेश राज्य सहकारी बैंक की समीक्षा करते हुए निर्देश दिए कि एक सप्ताह बैंक में साफ-सफाई अभियान चलाएं। इसके लिए इंटर डिपार्टमेंट कॉम्पटीशन भी हो। उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वालों को आगामी सहकारी मंथन कार्यक्रम में पुरस्कृत भी किया जाएगा। उन्होंने कहा कि सहकारी बैंक विभाग का फेशिया है, इसे स्वच्छ रखना हमारी जिम्मेदारी है। मंत्री ने सहकारी बैंकों को कॉर्पोरेट जैसे कल्चर से जोड़ने के लिए आवश्यक ट्रेनिंग दिलवाने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने प्रोफेशनल के माध्यम से स्किल डेव्हलपमेंट की बात कही। उन्होंने वर्किंग पेटर्न को अपडेट करने के लिए कंसलटेंट रखने को भी कहा। बताया गया कि फिजिकल ट्रेनिंग जल्द ही शुरू होने जा रही है। बैठक में आयुक्त सहकारिता एवं पंजीयक आलोक कुमार सिंह, उप सचिव मनोज सिन्हा, प्रबंध संचालक अपेक्स बैंक मनोज गुप्ता सहित अनुभाग प्रमुख उपस्थित थे।

पुन: अध्ययन के निर्देश - मंत्री ने बैंकों में रिक्त पदों की भर्ती के संबंध में सेवा नियमों का पुन: अध्ययन करने के निर्देश दिए। सेवा नियमों में जहाँ व्यावहारिक परेशानी आ रही है, उसकी 10 दिन में कमेटी बनाकर रिपोर्ट प्रस्तुत की जाए, जिससे नियमों का सरलीकरण किया जा सके। पूर्व में भर्ती प्रक्रिया में चयनित उम्मीदवारों को जल्द से जल्द ज्वाइन करवाने की कार्यवाही सुनिश्चित करें।

लक्ष्य तय करें

मंत्री ने कहा कि प्रदेश के आर्थिक रूप से कमजोर श्रेणी में वर्गीकृत जिला सहकारी केन्द्रीय बैंकों में सुधार लाने के लिऐ मुख्यालय से वरिष्ठ अधिकारियों का लक्ष्य निर्धारित करें, जिससे उन्हें आगे बढ़ाया जा सके। बैंकों की स्थिति ठीक करने पर अधिकारियों को पुरस्कृत भी किया जाएगा।

खाद वितरण पर चर्चा

बैठक में राज्य सहकारी बैंक के स्टॉफिंग पेटर्न पर विस्तार से चर्चा की गई। सीधी भर्ती, रिक्त पदों की स्थिति, वित्तीय स्थिति, प्राथमिक कृषि साख सहकारी समितियों का कम्प्यूटराइजेशन, माइक्रो एटीएम, रूपे किसान क्रेडिट कार्ड सहित आधुनिक बैंकिंग सेवाएं, ऋण वितरण, रासायनिक खाद वितरण, धान उपार्जन सहित भविष्य की कार्य-योजनाओं पर चर्चा की गई।

वैश्विक मौसम एजेंसियों ने पूर्वानुमान के जारी किए आंकड़े

अल नीनो संकट रहेगा पर पिछले साल की तरह अधिक सूखे के संकेत नहीं

-अल नीनो की स्थिति अप्रैल-जून में न्यूट्रल रहने के संकेत

-2023 में फसलें प्रभावित, खरीफ उत्पादन 3 फीसदी गिरा

भोपाल। जागत गांव हमार

अल नीनो की स्थिति अप्रैल-जून 2024 में न्यूट्रल रहने के संकेत हैं। वैश्विक स्तर की 3 मौसम एजेंसियों ने कहा है कि अल नीनो की स्थिति अक्टूबर-नवंबर 2023 के दौरान चरम पर थी वह अप्रैल-जून 2024 के दौरान न्यूट्रल यानी तटस्थ रहने की संभावना है। इसका मतलब है कि पिछले सीजन की तरह इस बार अधिक सूखे की आंशका नहीं है। 2023 में अल नीनो के प्रभाव से सूखा बना रहा था और भारत में फसलें बुरी तरह प्रभावित हुईं, जिसके नतीजे में खरीफ फसलों का उत्पादन 3 फीसदी तक गिर गया।

समुद्री सतह की गर्मी कम होने का अनुमान - यूएस की संस्था क्लाइमेट प्रेडिक्शन सेंटर ने कहा है कि अक्टूबर और नवंबर 2023 में मध्य और पूर्व-मध्य प्रशांत क्षेत्र में समुद्र की सतह का तापमान में गड़बड़ियां बढ़ गईं थीं। हालांकि, दिसंबर की शुरुआत से समुद्री सतह के तापमान की गड़बड़ियों सुधार के संकेत मिल रहे हैं। क्लाइमेट प्रेडिक्शन सेंटर ने कहा कि अप्रैल-जून के दौरान स्थितियों के न्यूट्रल रहने की 73 फीसदी संभावना है।

छह महीनों में अल नीनो के कमजोर होने के संकेत

ऑस्ट्रेलियाई मौसम विज्ञान ब्यूरो ने कहा कि पिछले तीन हफ्तों में कुछ वायुमंडल इंडीकेटर कमजोर हो गए हैं। वहीं, यूरोपीय कॉपरनिकस क्लाइमेट चेंज (सी3एस) ने कहा कि अल नीनो चरम के करीब है, लेकिन, अगले 6 महीनों में इसके कमजोर होने का अनुमान है। ब्यूरो ने कहा कि मौसम मॉडल पूर्वानुमानों से संकेत मिलता है कि समुद्री सतह के तापमान में गर्मी रहने की आशंका बनी हुई है, जबकि, हिंद महासागर डिपोल (आईओडी) में सतह की गर्मी लगातार कमजोर हो रही है।

2024 में भी तापमान गर्म रहने की आशंका बरकरार

जून 2023 में शुरू हुए अल नीनो के नतीजे में वैश्विक तापमान ने कई रिकॉर्ड तोड़ दिए। यूरोपीय मौसम एजेंसी कॉपरनिकस के अनुसार जनवरी-मार्च 2024 की अवधि में गर्म तापमान की प्रवृत्ति जारी रहेगी। वैश्विक मौसम संस्था डब्लूएमओ के महासचिव सेलेस्टे साउलो ने कहा कि यह देखते हुए कि अल नीनो आमतौर पर वैश्विक तापमान के चरम पर पहुंचने के बाद सबसे अधिक प्रभाव डालता है और ऐसे में 2024 और भी अधिक गर्म होने की आशंका बनी हुई है।

अल नीनो की वजह से भारत का फसल उत्पादन गिरा

अल नीनो ने भारत को प्रभावित किया क्योंकि दक्षिण-पश्चिम मानसून कमजोर हो गया. इसके नतीजे में खरीफ फसलों का उत्पादन 3 फीसदी तक गिर गया। खासतौर पर अगस्त महीना 120 वर्षों में सबसे सूखा साबित हुआ। वहीं, अक्टूबर 2016 के बाद दूसरा सबसे गर्म महीना था। मानसून के बाद बारिश कम होने से रबी की बोवनी भी प्रभावित हुई है और धान और दालों को इसका खामियाजा भुगतना पड़ा है।

गन्ने के मोलासेस पर 50 फीसदी निर्यात शुल्क लगा, शक्कर सस्ती

इंदौर। जागत गांव हमार

सरकार ने अधिसूचना जारी कर शकर प्रसंस्करण के दौरान निकलने वाले मोलासिस पर 50 प्रतिशत का शुल्क लागू कर दिया है। यह लागू हो गया है। पेट्रोल में एथेनाल के मिश्रण के लक्ष्य को हासिल करने और आपूर्ति सुगम करने के लिए सरकार ने यह कदम उठाया है। देश में सरकार ने 2024-25 तक 20 प्रतिशत एथेनाल मिश्रित ईंधन और 2029-30 तक 30 प्रतिशत एथेनॉल-मिश्रित पेट्रोल प्राप्त करने का लक्ष्य रखा है। मोलासेस पर निर्यात शुल्क एथेनाल की घरेलू आपूर्ति बढ़ाने वाला कदम होगा। एथेनाल-मिश्रित पेट्रोल की उपलब्धता को बढ़ा सकता है। शक्कर में अपेक्षित ग्राहकी नहीं होने और आवक अच्छी रहने से भाव में मंदी रही। शकर नीचे में 3850 ऊपर में 3890 रुपए प्रति क्विंटल रह गई। शक्कर की आवक सात गाड़ी की बताई गई। नारियल में कारोबार सामान्य रहा। भाव में कोई खास परिवर्तन नहीं रहा। नारियल की आवक दो गाड़ी की बताई गई। खोपरा गोला और खोपरा बूरे में ग्राहकी जोरदार देखी गई जिससे इनके दाम मजबूती पर टिके हुए हैं।

सरसों और जौ फसल में माहू कीट के प्रबंधन की वैज्ञानिक ने बताई विधि

टीकमगढ़। जागत गांव हमार

कृषि विज्ञान केंद्र, टीकमगढ़ के वैज्ञानिकों डॉ. बीएस किरार, डॉ. आरके प्रजापति, डॉ. एसके सिंह, डॉ. यूएस धाकड़, डॉ. एसके जाटव और जयपाल छिगारहा द्वारा विगत दिवस मोखरा, गुदनवारा, पठा एवं कोडिया आदि ग्रामों में सरसों, जौ, मसूर, चना एवं मटर आदि फसलों का किसानों के साथ भ्रमण किया गया। फसल अवलोकन के दौरान सरसों, जौ, मसूर और मटर में महू कीट की समस्या देखी गई। माहू कीट फसलों के तना, पत्तियां, फूलों, एवं फलियों से रस चूसकर पौधा को कमजोर कर देता है। जिससे फसलों के उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। इसके प्रबंधन के लिए इमिडाक्लोरोप्रिड 17.8 फीसदी दवा 100 मिली या डाईमेथोएट 30 ईसी 400 मिली प्रति एकड़ की दर से 200 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। चना और मटर में चना फली छेदक इल्ली की समस्या देखी गई है यह की पौधे की पत्तियां फूलों कलियों एवं फली का दाना खाकर हानि पहुंचाते हैं। इसके प्रबंधन के लिए खेत में टी आकार की 20 से 25 लकड़ी की खूंटियां लगायें जिस पर कीट भक्षी पक्षी बैठकर ईल्लियों को खाकर काफी हद तक कीट को नियंत्रण में सहायक होगी। प्रकाश प्रपंच (लाइट ट्रेप) का उपयोग प्रौढ इल्ली को आकर्षित कर नष्ट करने में किया जा सकता है। इसी प्रकार से फेरोमोन प्रपंच 4 से 5 प्रति एकड़ में लगाने से नर कीट उसमे आकर्षित होकर प्लास्टिक की थैली में गिरकर नष्ट हो जाते हैं और किसानो को फसल में इल्ली आने की जानकारी भी मिल जाती है। इसके बाद खड़ी फसल में जैविक कीटनाशक दवा विबेरिया बेसियाना 400 मिली प्रति एकड़ की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें और कीट का आक्रमण ज्यादा बढ़ने पर क्यूनालफॉस 25 ईसी या फ्लुबेंडाजाइम 60 ग्राम प्रति एकड़ या इमामेक्टिन बेंजोएट या स्पाइनोसेंड या रायनेक्सीपायर 100 ग्राम प्रति एकड़ 150-200 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। किसान भाई अपनी फसलों की सतत निगरानी करते रहें और समय पर कीड़े बीमारियों के प्रबंधन के उपाय अपनाएं जिससे कम लागत में फसल की सुरक्षा की जा सके।

गडमल उत्पादन कार्यशाला सह जागरूकता कार्यक्रम

स्वास्थ्य-पोषण सुरक्षा के लिए पादप आनुवांषिक संसाधनों का संरक्षण

बैतूल। जागत गांव हमार

कृषि विज्ञान केन्द्र, बैतूल में दिनांक 16 जनवरी 2024 को गडमल उत्पादन कार्यशाला सह जागरूकता कार्यक्रम स्वास्थ्य एवं पोषण सुरक्षा के लिए पादप आनुवांषिक संसाधनों का संरक्षण विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया।

यह कार्यक्रम डॉ. ज्ञानेन्द्र प्रताप सिंह, निदशक, राष्ट्रीय पादप आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, भाकृअनुप नई दिल्ली, डॉ. राजकुमार गौतम, विभाग प्रमुख, जर्मप्लाजम मुल्यांकन विभाग भाकृअनुप नई दिल्ली, डॉ. प्रवीन कुमार सिंह,पादप प्रमुख विभाग, जर्मप्लाजम संग्रह विभाग, भाकृअनुप, नई दिल्ली, डॉ. कुलदीप त्रिपाठी, वैज्ञानिक, जर्मप्लाजम मुल्यांकन विभाग भाकृअनुप नई दिल्ली, के मार्गदर्षन मे तथा डॉ. डीपी शर्मा, संचालक, विस्तार सेवायें, जनेकृ विवि जबलपुर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

मुख्य अतिथि के रूप डॉ. सुनिल श्रीराम गोमासे, प्रधान वैज्ञानिक, राष्ट्रीय पादप आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, भाकृअनुप, अकोला, महाराष्ट्र, अतिथि के रूप में, सेवानिवृत्त प्रधान वैज्ञानिक डॉ. सुरेन्द्र पन्नासे, डॉ. संध्या मुरे, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख, पुष्पा झारिया, कृविके, हरदा, दीपक सरयाम सहायक संचालक कृषि तथा भीमपुर विकासखंड के 100 गडमल उत्पादक किसान उपस्थित रहें।

नामकरण के प्रयास के बारे में जानकारी किसानों को प्रदान की

डॉ. डीपी शर्मा, संचालक, विस्तार सेवायें, जनेकृ विवि जबलपुर के द्वारा गडमल के बीज उत्पादन कार्य करने के लिए प्रेरित किया गया। डॉ. व्हीके वर्मा द्वारा गडमल उत्पादन तकनीकी के बारे मे जानकारी दी। डॉ. सुनिल श्रीराम गोमासे, ने गडमल की फसल के भोगोलिक संकेत प्राप्त करने के लिए राष्ट्रीय पादप आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, भाकृअनुप नई दिल्ली द्वारा किए गए संशोधन कार्य तथा इसके नामकरण के प्रयास के बारे में जानकारी किसानों को प्रदान की। सेवानिवृत्त प्रधान वैज्ञानिक डॉ. सुरेन्द्र पन्नासे, के द्वारा गडमल के औषाधिय महत्व के बारे मे जानकारी दी गयी। डॉ. मेघा दुबे, शस्य वैज्ञानिक द्वारा गडमल की उन्नत उत्पादन तकनीकी के बारे मे किसानों को जानकारी दी। डॉ. एमपी इंगले द्वारा मोटे अनाज के उत्पादन के बारे किसानों को जानकारी दी एवं डॉ. संजय जैन, द्वारा किसानों केन्द्र की विभिन्न इकायों का भ्रमण कराया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. संजीव वर्मा एवं आभार प्रदर्शन डॉ. सुनिल श्रीराम गोमासे द्वारा किया गया।

वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक सम्पन्न

बैतूल। जागत गांव हमार

कृषि विज्ञान केन्द्र, बैतूल में गत दिवस वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक का आयोजन किया गया।

यह कार्यक्रम डॉ. डीपी शर्मा, संचालक, विस्तार सेवायें, जनेकृविवि जबलपुर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि के रूप डॉ. सुनिल श्रीराम गोमासे, प्रधान वैज्ञानिक, राष्ट्रीय पादप आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, भाकृअनुप, अकोला, महाराष्ट्र, अतिथि के रूप मे उपस्थित थें। यह कार्यक्रम मे सेवानिवृत्त प्रधान वैज्ञानिक डॉ. सुरेन्द्र पन्नासे, डॉ. संध्या मुरे, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख, पुष्पा झारिया, कृविके, हरदा, दीपक सरयाम सहायक संचालक कृषि, बैतूल एवं अन्य विभाग के अधिकारी तथा प्रगतिषील कृषकों की भागीदारी रही। कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. व्हीके वर्मा ने मुख्य अतिथियों का स्वागत किया एवं वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। इसके पश्चात केन्द्र की प्रसार वैज्ञानिक डॉ. संजीव वर्मा द्वारा खरीफ 2023 में केन्द्र द्वारा क्रियान्वित समस्त गतिविधियों जैसे-प्रक्षेत्रीय परीक्षण, प्रथम पंक्ति प्रदर्शन, समूह प्रदर्शन, प्राकृतिक खेती प्रदर्शन, विभिन्न इकाइयों से प्राप्त आय, सीड हब कार्यक्रम के अंतर्गत बीज उत्पादन, कार्य योजना एवं प्रशिक्षण आदि की जानकारी प्रदान की।

केन्द्र द्वारा रबी 2023-24 में क्रियान्वित गतिविधियों का कार्ययोजना संक्षिप्त विवरण माननीय सदस्यों के समक्ष प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में 27 सदस्य उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. संजीव वर्मा और आभार प्रदर्शन डॉ. मेघा दुबे द्वारा किया गया।

देवारण्य योजना के अर्न्तगत दो दिवसीय कृषक प्रशिक्षण सम्पन्न

रीवा। जागत गांव हमार

मप्र शासन द्वारा औषधीय पौधो के संवर्धन एवं इसके द्वारा कृषकों की आय बढ़ाने के उददेश्य से देवारण्य योजना प्रदेश में लागू की गयी है। देवारण्य योजना अंतर्गत अश्वगंधा, शतावरी, तुलसी, की कृषि, संग्रहण तथा स्वैच्छिक प्रमाण, तकनीकी दृष्टि विषयों पर कृषकों की क्षमता निर्माण के उददेश्य से जिला आयुष कार्यालय एवं कृषि विज्ञान केन्द्र के संयुक्त तत्वधान से दो दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण कृषि विज्ञान केन्द्र रीवा में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में रीवा जिले के विभिन्न कृषक उत्पादक संगठनों के 35 कृषकों ने भाग लिया तथा औषधीय पौधो की खेती से सबंधित ज्ञान एवं कौशल अर्जित किया। उक्त प्रशिक्षण संभागीय आयुष अधिकारी डॉ. शारदा मिश्रा के निर्देशन में डॉ. संजय सिंह कृषि वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केन्द्र के सक्रिय सहयोग से सम्पन्न हुआ। उक्त प्रशिक्षण में प्रशिक्षक के रूप में डॉ.एके पटेल, डॉ. स्मिता सिंह एवं डॉ. संजय सिंह ने विषय से संबधित तकनीकी जानकारी प्रदान की। आयुर्वेद महाविद्यालय रीवा के प्राचार्य डॉ. दीपक कुलश्रेष्ठ ने कृषकों को औषधीय पौधों के महत्व के बारे में अवगत कराया। अंत में कृषकों को शा.आयुर्वेद महा.वि. रीवा के हर्वल गार्डन का भ्रमण भी कराया गया। जिसके माध्यम से कृषकों को औषधीय पौधो की पहचान एवं महत्व के बारे में प्रशिक्षित किया गया। कार्यक्रम का संचालन एवं सम्वयन आयुष विभाग डॉ. पंकज मिश्रा एवं डॉ. दाउद द्वारा किया गया जिसमें कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिक डॉ. सीजे सिंह डॉ. केसी सिंह, डॉ. अखिलेश व एमके मिश्रा भी उपस्थित रहे।

कृषि वैज्ञानिक विकसित भारत संकल्प यात्रा में ग्राम पंचायतों में पहुंचे

रायसेन। जागत गांव हमार

जिले में विकसित भारत संकल्प यात्रा का शुभारंभ गत दिवस सातों विकासखंड में किया गया है। जिसमें कृषि विज्ञान केन्द्र, रायसेन के सांची विकासखंड में वैज्ञानिक डॉ. मुकुल कुमार, आलोक कुमार सूर्यवंशी गैरतगंज विकासखंड में, रंजीत सिंह राघव, डॉ. स्वप्निल दुबे, बेगमगंज विकासखंड में डॉ. प्रदीप कुमार द्विवेदी एवं सिलवानी विकासखंड में डॉ. ब्रहमा नंद शुक्ला द्वारा तकनीकी जानकारी दी जा रही है। डॉ. स्वप्निल दुबे ने बताया कि विकसित भारत संकल्प यात्रा में ग्राम पंचायतों में आईईसी वैन पहुंच रही है, जिसके माध्यम से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का संदेश कृषकों को दिखाया जा रहा है। विकसित भारत संकल्प यात्रा का प्रमुख उद्देश्य पात्र नागरिकों को केन्द्र सरकार की विभिन्न योजनाओं से लाभान्वित करना है जो किन्ही कारणों से योजनाओं का लाभ लेने से छूट गए हैं।

ड्रोन के माध्यम से नैनो यूरिया का प्रदर्शन करके किसानों को दिखाया जा रहा

विकसित भारत संकल्प यात्रा के दौरान केन्द्र सरकार की विभिन्न योजनाओं आयुष्मान भारत, पीएम आवास योजना, पीएम उज्जवला योजना, पीएम विश्वकर्मा योजना, पीएम प्रणाम योजना आदि योजनाओं के हितग्राहियों को लाभान्वित किया जा रहा है। कृषि विज्ञान केन्द्र, रायसेन के कृषि वैज्ञानिक 18 जनवरी, 2024 तक रायसेन जिले के कुल 258 ग्राम पंचायतों में विकसित भारत संकल्प यात्रा के माध्यम से पहुंच चुके हैं। इन कार्यक्रमों के माध्यम से जिले के कुल कृषक 1,16,322 को तकनीकी जानकारी से लाभान्वित हुए हैं। साथ ही साथ 287 कृषकों को मृदा स्वास्थ्य कार्ड वितरित किए गए एवं कृषकों के खेतों पर 38 ग्राम पंचायतों में ड्रोन का प्रदर्शन किया गया है। कृषि विज्ञान केन्द्र, रायसेन के वैज्ञानिकों द्वारा प्राकृतिक खेती, मृदा स्वास्थ्य कार्ड, नैनो यूरिया, नैनो डीएपी, ड्रोन तकनीक, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, किसान क्रेडिट कार्ड, आदि विषयों पर तकनीकी जानकारी दी जा रही है, साथ ही साथ ड्रोन के माध्यम से नैनो यूरिया का भी प्रदर्शन करके कृषकों को दिखाया जा रहा है।

-केंद्रीय कृषि मंत्रालय ने किसानों के लिए जरी की एडवाइजरी

रोग-पाला से फसल को बचाने करें उपाए, बढ़ जाएगा फसलों का उत्पादन

मध्य प्रदेश सहित तीन राज्यों में बढ़ा गेहूं का रकबा

भोपाल। जागत गांव हमार

केंद्रीय कृषि मंत्रालय ने इस बार गेहूं की बंपर उत्पादन की उम्मीद जताई है, लेकिन इसके साथ ही उसने शीतलहर और कड़ाके की सर्दी को देखते हुए गेहूं उत्पादक किसानों को लिए सलाह भी जारी की है। मंत्रालय की सलाह के मुताबिक, किसानों को गेहूं की बोवनी के 40-45 दिन बाद तक नाइट्रोजन उर्वरक का प्रयोग पूरा करना चाहिए। इससे फसल की अच्छी ग्रोथ होती है। कृषि मंत्रालय की सालह की माने तो किसान बेहतर परिणाम के लिए गेहूं की फसल की सिंचाई से ठीक पहले खेत में यूरिया डालें। वहीं, जिन किसानों ने देरी से गेहूं की बोवनी की है और उनके खेत में संकरी और चौड़ी पत्ते वाखे खरपतावर दिखाई दे रहे हैं, तो उन्हें शाकनाशी का इस्तेमाल करना चाहिए। सलाह में कहा गया है कि किसान शाकनाशी सल्फोसल्फ्यूरॉन 75 डब्ल्यूजी को लगभग 13.5 ग्राम प्रति एकड़ या सल्फोसल्फ्यूरॉन प्लस मेट्सल्फ्यूरॉन 16 ग्राम को 120-150 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ में छिड़काव करें। अगर किसान चाहें, तो पहली सिंचाई से पहले या सिंचाई के 10-15 दिन बाद स्प्रे कर सकते हैं।

पीला रतुआ रोग से बचाएं

पीला रतुआ रोग के लिए अनुकूल आर्द्र मौसम को ध्यान में रखते हुए, किसानों को सलाह दी गई है कि वे धारीदार रतुआ (पीला रतुआ) की घटनाओं को देखने के लिए नियमित रूप से अपनी फसलों का दौरा करें। अगर कोई पौधा पीला रतुआ रोग से संक्रमित दिख रहा है, तो उसे खेत से बाहर निकाल दें। इससे संक्रमण दूसरे पौधों तक नहीं फैलेगा।

हल्की सिंचाई करने की सलाह

पाला प्रबंधन के लिए मौसम विभाग के पूर्वानुमान को ध्यान रखते हुए गेहूं की हल्की सिंचाई करने की सलाह दी गई है। मौसम विभाग ने 20-30 जनवरी के दौरान भारत के पूर्वोत्तर और मध्य क्षेत्रों में बारिश की भविष्यवाणी की है और आगामी सप्ताह में तापमान सामान्य से नीचे जाने की उम्मीद है। वहीं, सरकार चरम मौसम की स्थिति में गेहूं की फसल को बचाने के लिए किसानों को तैयार करने में मदद करने के लिए सक्रिय कदम उठा रही है।

336.96 लाख हेक्टेयर में गेहूं की बोवनी

कृषि मंत्रालय ने कहा कि फसल वर्ष 2023-24 के चालू रबी सीजन के अंतिम सप्ताह तक किसानों ने 336.96 लाख हेक्टेयर में गेहूं की बोबनी की है, जोकि पिछले साल के 335.67 लाख हेक्टेयर से अधिक है। खास बात यह है कि अब गेहूं की बोवनी पूरी हो गई। कृषि मंत्री ने कहा कि उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और पंजाब तीन ऐसे शीर्ष राज्य हैं, जहां पर गेहूं का रकबा सबसे अधिक है।

-चार वर्ष बाद शामिल होगी मध्य प्रदेश की झांकी

दिल्ली की परेड में दिखेगी लहरी बाई के बीजों को बचाने की झलक

- लहरी बाई के साथ गौंड़ी पेंटिंग भी रहेगी शामिल
- लहरी को पद्मश्री दिलाने के लिए जानकारी भेजी
- झांकी की थीम विकास का मूल मंत्र आत्मनिर्भर नारी पर आधारित रखा गया
- लहरी बाई का शामिल होना आदिवासी बहुल डिंडोरी जिले के लिए गौरव की बात

भोपाल। जागत गांव हमार

गणतंत्र दिवस के अवसर पर देश की राजधानी में आयोजित परेड के दौरान विलुप्त होते मोटे अनाज के बीज को संरक्षित करने वाली लहरी बाई की भी अहम भूमिका नजर आएगी। मध्य प्रदेश की झांकी में लहरी बाई का चित्र मोटे अनाज को संरक्षित करने का संदेश देगा। इसी के साथ गौड़ी पेंटिंग की झलक भी प्रदेश की झांकी में रहेगी। गौरतलब है कि मध्य प्रदेश की झांकी अंतिम बार वर्ष 2019 में ही दिल्ली के मुख्य समारोह में शामिल हो पाई थी। चार वर्ष बाद प्रदेश की झांकी को दिल्ली में आयोजित परेड में फिर होने का मौका मिल रहा है। मध्य प्रदेश की झांकी की थीम विकास का मूल मंत्र आत्मनिर्भर नारी पर आधारित रखा गया है। इसमें किस तरह हर क्षेत्र में मध्य प्रदेश की नारी आर्थिक तौर पर आत्मनिर्भरता हासिल कर रही है, इसका उल्लेख किया गया है।

बीज बैंक बनाया

दिल्ली के कर्तव्य पथ पर आयोजित समारोह में संरक्षित जनजाति की लहरी बाई का शामिल होना आदिवासी बहुल डिंडोरी जिले के लिए गौरव की बात है। 28 वर्षीय लहरी बाई बजाग जनपद अंतर्गत बैगा गांव सिलपिड़ी निवासी है। उनके द्वारा विलुप्त हो रहे मोटे अनाज के 30 से अधिक प्रजाति के बीजों को संरक्षित कर बीज बैंक बनाया गया है।

ब्रांड एंबेसडर

लहरी बाई मोटे अनाज की खेती करने वाले किसानों को यह बीज अपने बीज बैंक से उपलब्ध कराया जाता रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा जब मन की बात में भी लहरी बाई का जिक्र किया गया तो वो देश भर में चर्चाओं में आई। लहरी बाई को माटे अनाज का ब्रांड एंबेसडर भी बनाया गया है। लहरी बाई को पद्मश्री दिलाने के लिए भी कवायद जारी है।

मध्य प्रदेश की झांकी में विलुप्त हो रहे मोटे अनाज के बीज को संरक्षित कर बीज बैंक बनाने वाली जिले की बैगा जनजाति की महिला लहरी बाई के साथ गौंड़ी पेंटिंग भी नजर आएगी। यह जिले के लिए गौरव की बात है। लहरी बाई को पद्मश्री दिलाने के लिए भी जानकारी भेजी जा रही है।
-विकास मिश्रा, कलेक्टर, डिंडोरी

जिले की 33 ग्राम पंचायतों में से 32 ग्राम पंचायतों में चुने गए उप सरपंच

कहीं निर्विरोध तो कहीं पंचों की वोटिंग से हुआ उप-सरपंच का फैसला

श्योपुर। जागत गांव हमार

जिले की 32 ग्राम पंचायतों में खाली बने उप सरपंच पद के लिए उप चुनाव शांतिपूर्ण तरीके से सम्पन्न हो गए हैं। इस दौरान कहीं निर्विरोध तो कहीं वोटिंग के जरिए पंचों ने नए उप सरपंच का चुनाव किया। लेकिन ग्राम पंचायत रामबड़ौदा में चुनाव के दौरान पंच आपस में भिड़ गए, जिस कारण यहां चुनाव निरस्त करना पड़ा। अब यहां उप सरपंच पद के लिए फिर से चुनाव कराया जाएगा। जो पंच उप सरपंच निर्वाचित हुए है,उनके समर्थकों में हर्ष की लहर व्याप्त हो गई है।

यहां बता दें कि जनपद पंचायत श्योपुर की 28 ग्राम पंचायतों में उप सरपंच के पद खाली पडे है। वहीं जनपद पंचायत कराहल की 5 ग्राम पंचायतों में भी उप सरपंच के पद रिक्त बने हुए है। जिसकी वजह ग्राम पंचायतो में पंचो के पद रिक्त होना था। पिछले महीने जिले में आयोजित हुए पंचायत उप चुनाव के तहत ग्राम पंचायतों में रिक्त बने पंच पदो के लिए चुनाव कराया गया। पंच पदो के लिए हुए उप चुनाव के बाद प्रशासन के द्वारा जनपद पंचायत श्योपुर और जनपद कराहल की ग्राम पंचायतों में रिक्त बने उप सरपंच पदों के लिए शुक्रवार को उप चुनाव कराए गए। जहां कलेक्टर संजय कुमार की देखरेख में पहुंचे अधिकारियों ने पंचों की उपस्थिति के बीच उप सरपंच का चुनाव कराया गया। बताया गया है कि जनपद पंचायत श्योपुर की ग्राम पंचायत रामबडौदा में जब प्रशासन की ओर से अधिकृत अमला चुनाव करा रहा था, तभी यहां पंचों के बीच विवाद हो गया। विवाद इतना बढ गया कि दोनों पक्षों के पंच आपस में भिड़ गए। किसी तरह यहां मौजूद अमले ने समझाइस के बाद मामले को शांत कराया और फिर चुनाव की प्रक्रिया को निरस्त कर दिया। जनपद सीईओ श्योपुर एसएस भटनागर ने बताया कि विवाद की वजह से ग्राम पंचायत रामबड़ौदा में उप सरपंच का चुनाव नहीं हो सका है। अब यहां फिर से उप सरपंच के लिए चुनाव कराया जाएगा। जबकि 27 पंचायतों में शांतिपूर्ण तरीके से चुनाव हो गए।

जनपद पंचायत श्योपुर की 27 ग्राम पंचायतों में से 23 ग्राम पंचायतों में निर्विरोध रूप से उप सरपंच का चुनाव हो गया। जबकि चार ग्राम पंचायतों में पंचों के बीच हुई वोटिंग से उप सरपंच चुना गया है। बताया गया है कि ग्राम पंचायत ढोंढपुर में राजेन्द्र बैरवा, गोहेडा में धनराज मीणा, लुहाड में शीला मीणा, नागदा में राकेश मीणा पंचों के बीच हुई वोटिंग से उप सरपंच निर्वाचित हुए हैं। जबकि ग्राम पंचायत अलापुरा में दाखा बाई बैरवा, आमल्दा में योगेश यादव, बागल्दा में मोहम्मद इंसाफ, बाजरली में नंदकिशोर वैष्णव, बासांद में रूकमकेश मीणा, बनवाडा में रामकिशन प्रजापति, बहरावदा में योगेश कुमार, बोरदादेव में रानी बाई मीणा,गलमान्या में रणवीर सुमन, हिरनीखेडा में सुनीता सेन, जानपुरा में बाबूलाल बैरवा, जवासा में गिर्राज सेन, जावदेश्वर में गिर्राज मीणा, कनापुर में अमर सिंह मीणा, मकडावदाकलां में विनोद आदिवासी, मठेपुरा में पदमा माली, मेखडाहेडी में रिंकू मीणा, मेवाडा में असमुद्दीन, पनवाड़ में अशोक गुर्जर, प्रेमपुरा में खुसिया बाई बैरवा तलावड़ा में सुलोचना बाई जाट,विजरपुर में तुलसा बाई सुमन तथा ग्राम पंचायत सिरसोद में बोनस आदिवासी निर्विरोध उप सरपंच चने गए हैं।

श्योपुर में 4 पंचायतों में वोटिंग से तो 23 पंचायतों में निर्विरोध चुने गए उप सरपंच

400 क्विंटल का पुराना स्टाक बेचना चुनौती, सिर्फ सैंपल के रूप में स्टालों में बिक रहा

-किसानों में चिन्नौर की खेती के लिए बढ़ गया रुझान

विदेश छोड़िए! मध्यप्रदेश में ही नहीं मिल रहे चिन्नौर के खरीदार

भोपाल। जागत गांव हमार

बालाघाट के जिस उत्पाद को लंबी जद्दोजहद के बाद राज्य सरकार ने जीआई टैग दिया था, उसके लिए दो साल बाद भी अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय बाजार नहीं बन सका है। खुशबू, स्वाद जैसी खूबियों के लिए पहचाने जाने वाले बालाघाट के चिन्नौर को 29 सितंबर 2021 को जीआई टैग मिला था। इसके बाद इस चावल की खुशबू को विदेशों तक बिखेरने और जिले को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नई पहचान मिलने के कई दावे हुए थे, लेकिन दुर्भाग्य है कि दो साल चार महीने बाद विदेश छोड़िए, इस चावल के मध्यप्रदेश में ही बड़े खरीदार नहीं मिल रहे हैं।

सिर्फ सैंपल के रूप में बिक रहा - यह चावल अब भी सिर्फ सैंपल के रूप में स्टालों में बिक रहा है। जिला प्रशासन तथा कृषि विभाग ने भले ही चिन्नौर का उत्पादन बढ़ाना में सफलता हासिल की है, लेकिन चिन्नौर के लिए मार्केट बनाने में पिछड़ गया है। अधिकारी भी स्वीकार करते हैं कि दो साल से अधिक समय में चिन्नौर के लिए बड़ा मार्केट बनना था। अधिकारी अब उत्पादन के साथ बाजार बनाने की दिशा में प्रयास करने का दावा कर रहे हैं।

कृषि विभाग-एफपीओ के लिए पुराना स्टाक खपाना चुनौती

2022 के खरीफ सीजन में जिले के वारासिवनी, लालबर्रा तथा खैरलांजी क्षेत्र के किसानों द्वारा करीब एक हजार क्विंटल चिन्नौर की खेती की गई थी, जिसमें अब भी 400 क्विंटल धान बेचना शेष है। जबकि दूसरी तरफ इस साल के खरीफ सीजन के चिन्नौर धान की खरीदी होना बाकी है। ऐसे में पिछले साल तथा इस खरीफ सीजन के धान को बेचना न सिर्फ कृषि विभाग तथा एफपीओ के लिए भी चुनौती बन रहा है।

प्रदर्शनियों तक सिमटा चिन्नौर

जिला प्रशासन ने चिन्नौर के उत्पादन को लेकर भरसक प्रयास किए, लेकिन इसके लिए बाजार बनाने में प्रशासन व शासन के प्रयास असफल साबित हुए हैं। चिन्नौर के प्रचार-प्रसार तथा मार्केट बनाने के लिए मप्र सहित देशभर के बड़े शहरों में आयोजित प्रदर्शनियों में स्टाल लगाकर इसकी खासियतें बताई जा रही हैं। एक-दो किलो के पैकेटों में चिन्नौर को सैंपल के रूप में प्रदर्शित किया जा रहा है, लेकिन बाजार बनाने के लिए कोई कदम नहीं उठाए जा रहे, जो कदम उठाए गए हैं, वह भी असरदार साबित नहीं हो पाए हैं। चिन्नौर बालाघाट और मप्र में ही सिमटकर रह गया है।

चिन्नौर का उत्पादन बढ़ाने और बाजार बनाने की जिम्मेदारी

चिन्नौर के उत्पादन की बात करें, तो विभागीय अधिकारियों व एफपीओ द्वारा प्रचार-प्रचार की बदौलत जिले के किसानों में चिन्नौर की खेती के लिए रुझान बढ़ा है, लेकिन इस धान के लिए दो साल से अधिक समय बाद भी उचित बाजार व खरीदार नहीं मिलने से किसान भी चिंतित हैं। जिले में लालबर्रा व वारासिवनी में दो फॉर्मर प्रोड्यूसर आर्गनाइजेशन (एफपीओ) कंपनी लिमिटेड संचालित हैं, जिन पर चिन्नौर का उत्पादन बढ़ाने तथा मार्केट बनाने की जिम्मेदारी है।

मुख्य बिंदु

- वर्तमान में जिले के पांच हजार से अधिक किसान कर रहे चिन्नौर की खेती
- जीआई टैग मिलने से पहले एक हजार से 1500 किसान ही करते थे खेती
- पहले चिन्नौर का रकबा हजार-1200 एकड़ था, वर्तमान में पांच हजार एकड़
- वारासिवनी, लालबर्रा, खैरलांजी, कटंगी, किरनापुर में चिन्नौर का हो रहा ज्यादा उत्पादन
- चिन्नौर को पकने में 160 दिन लगते हैं
- धान की ऊंचाई करीब 150 सेमी तक होती है
- एक एकड़ में सात-आठ क्विंटल धान का उत्पादन
- चिन्नौर चावल की 90 से 100 रुपए किलो कीमत

चिन्नौर के मार्केटिंग में दिक्कतें आ रही हैं। हालांकि, इसका उत्पादन जीआई टैग मिलने के बाद बढ़ा है। भोपाल, दिल्ली सहित देशभर में लगने वाली प्रदर्शनियों में स्टाल लगाकर चिन्नौर का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है। लोग चिन्नौर को जानने लगे हैं। इसकी पूछ-परख भी बढ़ी है। विदेशों में इसके निर्यात के लिए अधिक मात्रा चाहिए, जिसे हम बढ़ा रहे हैं। एफपीओ और कृषि विभाग द्वारा चिन्नौर के लिए बड़े स्तर पर प्रस्ताव लेने तथा बाजार बनाने के लिए प्रयास तेज किए जाएंगे।
राजेश खोब्रागढ़े, उप संचालक, कृषि विभाग, बालाघाट

जीआई टैग के लिए महाराष्ट्र भी था दावेदार

कृषि विभाग, बालाघाट ने 2019 में चिन्नौर को जीआई टैग दिलाने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, हैदराबाद में दावा किया था। मप्र के साथ महाराष्ट्र भी जीआई टैग का दावेदार था, लेकिन परिषद ने मप्र के चावल को मान्यता दी थी। बालाघाट के चिन्नौर चावल को जीआई टैग मिलने के बाद इसके उत्पादन बढ़ने और अच्छे दाम मिलने के आसार बने थे। इन सवा दो सालों में चिन्नौर का उत्पादन, किसानों की संख्या तो बढ़ी लेकिन बाजार अब तक नहीं बन पाया है। तेज सुगंध वाली किस्म में शामिल चिन्नौर चावल स्वास्थ्य और स्वाद दोनों में उत्कृष्ट है।

उज्जैन में सीएम के हाथों होगा झंडावंदन श्योपुर में कृषि मंत्री फहराएंगे तिरंगा

भोपाल। 26 जनवरी को देश का 75वां गणतंत्र दिवस मनाया जाएगा। ऐसे में राज्य की राजधानी भोपाल में आयोजित मुख्य समारोह में राज्यपाल मंगु भाई पटेल तिरंगा फहराएंगे। वहीं गणतंत्र दिवस पर इस बार उज्जैन दक्षिण से विधायक और सीएम डॉ. मोहन यादव दशहरा मैदान पर झंडावंदन करेंगे। 1950 से लेकर अब तक बीते 74 वर्षों में 26 जनवरी गणतंत्र दिवस पर किसी भी मुख्यमंत्री ने उज्जैन में झंडा नहीं फहराया और इस बार 75वें वर्ष में ऐसा उज्जैन का सौभाग्य रहा कि उज्जैन के विधायक से मुख्यमंत्री बने हैं। उन्होंने पहले ही वर्ष में उज्जैन में ही झंडा फहराने की घोषणा की। सभी विभागों को अपनी झांकी तैयार करने के लिए कहा है। इस बार 10-15 नहीं, बल्कि पूरी 55 से अधिक झांकियां निकलेगी। इधर, मुरैना में विधानसभा अध्यक्ष नरेंद्र सिंह तोमर, मंदसौर में उप मुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा, रीवा में उप मुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ल, खंडवा में विजय शाह, इंदौर में कैलाश विजयवर्गीय , नरसिंहपुर में प्रह्लाद पटेल, जबलपुर में राकेश सिंह, सीहोर में करण सिंह वर्मा, नर्मदापुरम में उदय प्रताप सिंह, मंडला में संपतिया उइके, देवास में तुलसीराम सिलावट,सागर में गोविंद सिंह राजपूत, दमोह में लखन पटेल, श्योपुर में एंदल सिंह कंसाना, झाबुआ में निर्मला भूरिया, विदिशा में विश्वास सारंग, ग्वालियर में नारायण सिंह कुशवाह, अलीराजपुर में नागर सिंह चौहान, गुना में प्रद्युम्न सिंह तोमर, भिंड में राकेश शुक्ला, रतलाम में चेतन्य कश्यप, शाजापुर में इंदर सिंह परमार, हरदा में कृष्णा गौर, छिंदवाड़ा में धर्मेंद्र सिंह लोधी, अनूपपुर में दिलीप जायसवाल, राजगढ़ में गौतम टेटवाल, बैतूल में नारायाण सिंह पंवार,रायसेन में नरेंद्र पटेल,सतना में प्रतिमा बागरी, छतरपुर में दिलीप अहिरवार और सिंगरौली में राधा सिंह तिरंगा फहराएंगी। शेष बचे हुए जिलों में कलेक्टर ध्वजारोहण करेंगे।

जागत गांव हमार के सुधि पाठकों...

» जागत गांव हमार कृषि, पंचायत और ग्रामीण विकास आधारित समाचार पत्र है, जिसके लिए आपका स्नेह और प्यार हमें शुरू से मिलता रहा है। हम आशा और विश्वास करते हैं कि आगे भी मिलता रहेगा।

» समाचार पत्र के लिए विशेषज्ञों की राय, प्रकाशन योग्य सामग्री के साथ-साथ आपके समक्ष इसे पहुंचाने तक हमारी जिम्मेदारी बड़ी चुनौतीपूर्ण है। आपके सहयोग से ही हम इस चुनौती का सामना कर पाएंगे।

» ऐसे में हमारी आपसे अपेक्षा और आग्रह है कि जागत गांव हमार के वार्षिक सदस्य बनें और इसके लिए नीचे लिखे गए नंबर पर संपर्क करें।

संपर्क करें- अजय द्विवेदी-9229497393, 94250485889

"आपका सहयोग हमारी मजबूती का आधार बनेगा"

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक अजय कुमार द्विवेदी द्वारा जय माता प्रिंटर्स, मं.नं.1, पेमदीपुरा बापू कालोनी के पास चिकलोद रोड, जहांगीराबाद, भोपाल(मप्र) से मुद्रित एवं एमआईजी 30, शिवकल्प, अयोध्या बाईपास भोपाल, मप्र से प्रकाशित। संपादक: अजय कुमार द्विवेदी, **संपर्क** -9229497393, 9425048589, ईमेल:- jagatgaon.bpl@gmail.com (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल होगा)